(इस मुरली का पहला पेज नहीं है)

2

माया ऐसी है जो एकदम माथा मूढ़कर गटर में गिरा देती है। कमजोर होने कारण माया के वश हो जाते बुद्धि मारी जाती है। कौन बुद्धि मारता है? 5विकारों रूपी रावण। यह भी अन्दर में तो समझते हैं स्थापना होनी ही है। ऐसे2 समझाते2 सावधान करते2 स्थापना होनी ही है। जो अच्छे सपूत बच्चे हैं वह समझते हैं बाप तो अच्छी ही मत देते हैं। इस पर चलना जरूर है। बाप के हम बच्चे हैं। ऐसा भाव–स्वभाव भाव वाला जरूर बनना है। वहां तो ऐसे आसुरी स्वभाव वाले, निन्दा करने वाले, किसकी दिल खराब करने वाले कोई होते ही नहीं। दिल भी चाहती है जल्दी2 हम अपनी राजधानी में जावें परन्तु इससे क्या होगा। हम बाप से जुदा हो जावेंगे। बेहद का बाप मिला है अहो सौभाग्य है। तो यहां रहना अच्छा है ना। 8 वर्ष भल आस्ते2 16 वर्ष मिसल पास हो तो और ही अच्छा है बाप के साथ में तो है ना। अगर बाप को इतना प्यार करने वाले हैं तो। अगर बाप को प्यार नहीं करते हैं तो कोई काम के नहीं। तुम भक्ति मार्ग में भी गाते आये हो हम सभी से जास्ती प्यार आप को करेंगे। तो बाप का फर्ज है समझाना। एक/दो को सामने कहने में भी देरी नहीं करते हैं। देह–अभिमानी तो ठहर न सके। ऊंच पद पा न सके। वह डिस सर्विस ही करते रहते हैं। शिवजयन्ती के लिये भी बच्चों को अच्छा ही शौक है और सर्विस के प्लैन्स भी बना रहे हैं। बाबा के पास सर्विस का समाचार तो आता है ना। बाबा बहुत2 अच्छे2 आये। यह तो समझते हैं भल ओपिनीयन भी लिखते हैं उस समय समझा फिर बाहर निकला और खलास। इसलिये कहा जाता है कोटों में कोई। बेहद का बाप आया है जिससे बेहद का वरसा लेना है। ऐसे समझते नहीं हैं। बच्चे लिखते हैं बहुत प्रभावित हुआ। प्रभावित तो तब कहें जब समझे यह बेहद की बाप की बात तो बिल्कुल सत्य है। 21 जन्मों का वरसा मिलता है। बाकी ऐसे तो बहुत आते हैं। 10/15 दिन आकर के फिर गुम हो जाते हैं। भल कोई धंधा आदि हो इसको भी रोक सकते हैं। सभी से अच्छा धंधा तो यह है ना। समझो टांग टूट जाये फिर जा कैसे सकेंगे। यह भी समझ टांग टूट गई है। जा नहीं सकता हूं। बैठ जाये; परन्तु ऐसे कोई देखने में नहीं आते हैं। इस ज्ञान मार्ग में ऐसे नहीं कह सकते। पहले आते थे तो तीखे जाते थे। सभी थोड़े ही इकट्ठे आवेंगे। बाबा तो कहते हैं आगे जो आये वह गिर गये। तुम ठीक चल रहे हो। तुम भी आगे आने वालों में गिर जाते तो! ज्ञान बड़ा मजे का है। पास्ट का चिंतन नहीं किया जाता है। गायन है अति इन्द्रिय सुख पूछना हो तो गोप गोपियों से पूछो। जो फट से वर्णन करते हैं। उनके ऊपर बलिहार जाते हैं। बलिहार जाने का अर्थ भी कोई समझते नहीं हैं। बलिहार होकर फिर कोई माथा नहीं खपाना होता है। बलिहार होकर फिर खुशी लेनी भी है खुशी देनी भी है; परन्तु माया बड़ी जबरदस्त है। अच्छा, रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार, गुडनाइट और नमस्ते।

प्रातः क्लास 1/1/69 ओमशान्ति पिता श्री शिवबाबा याद है?

ओम0 बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं अब इनको (ल0ना0) के चित्रों तरफ़ इशारा) तो अच्छी रीत देखते हो। यह है एमआबजेक्ट अर्थात् तुम इस घराने के थे। कितना रात–दिन का फर्क है। इसलिये घड़ी2 ..... देखना है। हमको ऐसा बनना है। इन्हों की महिमा तो अच्छी रीत जानते हो। यह पॉकिट में रखने से ही खुशी रहेगी। अन्दर में दुविधा जो रहती है वह न रहनी चाहिए। जिसको देहअभिमान कहा जाता है। देहीअभिमानी हो इन (ल0ना0) को देखेंगे तो समझेंगे हम ऐसे बन रहे हैं। तो जरूर इनको देखना पड़े। बाप समझाते हैं तुमको ऐसा बनना है। मद्याजीभव। इनको देखो याद करो। दृष्टान्त बताते हैं ना। उसने कहा मैं भैंस हूं मैं .... भैंस हूं। तो वह बन गया। तुम जानते हो हमारा यह एमआबजेक्ट है। यह बनने का है। कैसे बनेंगे? बाप की याद से। हरेक अपने से पूछे। बरोबर हम इनको देख बाप को याद कर रहे हैं। यह तो समझते हो बाबा ही हमको ऐसा देवता बनाते हैं। जितना हो सके याद करना चाहिए। यह तो बाप कहते हैं निरन्तर याद तो रह नहीं सकती है; परन्तु .... पुरूषार्थ करना है। भल गृहस्थ व्यवहार का कार्य करते हुये इनको (ल0ना0) याद करेंगे तो बाप जरूर याद आवेगा बाप को याद करेंगे तो यह जरूर याद पड़ेगा। हमको ऐसा बनना है। यही सारा दिन धुन लगी रहे। तो फिर

एक/दो की ग्लानि कब न करे। यह ऐसा है फलाना ऐसा है। बहुत बच्चे हैं जिनके अन्दर में यह किचड़ा रहता है। फिर दूसरों को बैठ सुनाते हैं। फलाना ऐसा है यह है। जो इन बातों में लग जाते हैं वह ऊंच पद पा न सकेंगे। ऐसे ही रह जाते हैं। कितना सहज समझाया जाता है इनको याद करो, बाप को याद करो तो तुम यह बन ही जावेंगे। संन्यासी आदि जो जानवरों आदि का मिसाल बताते हैं वह सभी हैं फाल। यहां तो तुम सामने बैठे हो। सभी के घर में यह ल0ना0 का चित्र जरूर होनी चाहिए। कितना एक्युरेट चित्र है। इनको याद करेंगे तो बाबा याद आवेगा। बाबा को याद करो तो यह याद आवेगा। सारा दिन और बातों के बदली यही सुनाते रहो। फलाना ऐसा है, यह है, किसकी निन्दा करना इसको दुविधा कहा जाता है। यह तो जानते हैं, सभी बन्दर बुद्धि मनुष्य हैं। उनको पलटाना है अर्थात् दैवीबुद्धि बनाना है। किसको दुःख देना, ग्लानि करना, चंचलता करना वह स्वभाव न होना चाहिए। इन बन्दरपने में तो आधा कल्प रहे हो। अभी तुम बच्चों को कितनी मीठी शिक्षा मिलती है। इनसे ऊंच प्यार दूसरा कोई होता ही नहीं। कब भी कोई उल्टा सुल्टा काम श्रीमत बिगर न करना चाहिए। बाप ध्यान के लिये भी डायरेक्शन देते हैं सिर्फ़ भोग लगाकर आओ। बाबा यह तो कहते नहीं कि वैकुण्ठ में जाओ। रास–विलास आदि करो। दूसरे जगह गई तो समझो माया की प्रवेशता हुई। माया का नम्बरवन कर्तव्य (है) गटर में डालना। बेकायदे चलन से नुकसान बहुत होता है। हो सकता है फिर कड़ी सजाएं भी खानी पड़ें। अगर अपन को सम्भालेंगे नहीं तो। बाप के साथ धर्मराज भी है। इनके पास बेहद का हिसाब किताब रहता है। बच्चे डरते नहीं हैं। कहां सजाएं न खावें। रावण के जेल में कितने वर्ष से सजाएं खाई हैं। इस दुनियां में कितना अपार दुःख है। अभी बाप कहते हैं और सभी बातें भूल बाप को ही याद करो और सभी दुविधा अन्दर से निकाल दो। विकार में कौन ले जाते हैं? माया के भूत। तुम्हारा एमआबजेक्ट ही यह है। राजयोग है ना। बाप याद करने से यह वरसा मिलेगा। तो इस ही धंधे में लग जाना चाहिए। किचड़ा सारा अन्दर से निकाल देना चाहिए। माया की परीक्षा भी बहुत कड़ी है। परन्तु उनको उड़ाते रहना है। जितना हो सके याद की यात्रा में रहना है। अभी तो निरन्तर याद हो न सके। आखरीन निरन्तर तक भी आवेंगे। तब ही ऊंच पद पावेंगे। अगर अन्दर दुविधा खराब ख्यालात होगी तो ऊंच पद मिल न सके। माया के वश होकर ही हार खाते हैं। बाप समझाते हैं बच्चे गंदा काम हराओ मत। निन्दा आदि करते2 तो तुम्हारी इतनी बुरी गति हुई है। अभी सद्गति होती है तो बुरे कर्म न करो। बाबा देखते हैं माया ने आधा तक ग्रास कर लिया है, पता भी नहीं पड़ता। खुद समझते हैं हम बहुत अच्छा चल रहे हैं; परन्तु नहीं। बाप समझाते हैं मनसा, वाचा, कर्मणा। मुख से रत्न ही निकलें। पत्थर न निकलनी चाहिए। बहुतों के मुख से पत्थर ही निकलते हैं। एक ही समय है जबकि तुम्हारे मुख से रत्न ही निकलनी चाहिए। गंदी बातें करना पत्थर है। अभी तुम पत्थर से पारस बनते हो। तो मुख से कभी भी पत्थर नहीं निकलनी चाहिए। हमेशा रत्न ही निकले। बाबा को तो समझाना पड़ता है। बाप का हक है बच्चों को समझाना। ऐसे तो नहीं भाई भाई को लकड़ी मारेंगे वा सावधानी देंगे। टीचर का काम है शिक्षा देना। वह कुछ भी कह सकते हैं। स्टुडेन्ट को लॉ नहीं उठाना है। तुम स्टुडेन्ट हो ना। बाप समझा सकते हैं। बाकी बच्चों को तो बाप का डायरेक्शन है एक बाप को याद करो। तुम्हारी तकदीर अभी खुली है। श्रीमत पर न चलने से तुम्हारी तकदीर बिगड़ पड़ेगी। फिर बहुत बहुत पछताना पड़ेगा। बाप की श्रीमत पर न चलने से एक तो सजाएं खानी पड़े और फिर पद भी भ्रष्ट। जन्म–जन्मान्तर कल्प कल्पान्तर की यह बाजी है। बाप आकर पढ़ाते हैं। तो बुद्धि में रहना चाहिए। बाबा हमारा टीचर भी है। यह नई नालेज मिलती है कि अपन को आत्मा समझो। आत्माएं और परमात्मा का मेला कहा जाता है ना। फिर 5000 वर्ष बाद मिलेंगे। इसमें जितना वरसा लेने चाहो ले सकते हो, नहीं तो बहुत पछतावेंगे। जार जार रोवेंगे। सभी सा0 हो जावेगा। स्कूल में बच्चे ट्रान्सफर होते हैं तो पिछाड़ी में बैठने वालों को सभी देखते हैं। यहां भी ट्रान्सफर होनी है। तुम जानते हो हम यहां शरीर छोड़कर फिर जाकर सतयुग में प्रिन्स के कॉलेज में पढ़ेंगे भाषा। वहां की भाषा तो सभी को पढ़नी पड़ती

है मदर लैंगवेज। बहुतों में पूरा ज्ञान नहीं है तो। पढ़ते भी रेगुलर नहीं हैं। आजकल मरे पड़े हैं। पढ़ते ही नहीं। एक/दो बार मिस किया तो वह आदत पड़ जावेगी मिस करने की। संग है माया के मुरीदों का। शिवबाबा के मुरीद थोड़े बाकी सभी हैं माया के मूरीद। तुम शिवबाबा के मुरीद बनते हो तो माया सहन नहीं कर सकती है। इसलिये सम्भाल बहुत करनी चाहिए। छी छी गन्दे मनुष्यों की बड़ी सम्भाल रखनी है। हंस और बगुले हैं ना। बाबा ने रात को भी शिक्षा दी है सारा दिन कोई की निन्दा करना, परचिन्तन करना इनको कोई दैवीगुण नहीं कहा जाता है। देवताएं ऐसे काम नहीं करते हैं। बाप कहते हैं बाप और वरसे को याद करो। फिर भी निन्दा करते रहते। निन्दा तो जन्म जन्मान्तर करते आये हो। दुविधा अन्दर रहती ही है। यह भी एक अन्दर गुप्त मारा–मारी है। गुप्त अपना खून करते हैं। बहुतों को घाटा डालते हैं। फलाना ऐसा है, फलाना ऐसा है। इसमें तुम्हारा क्या जाता है। सभी का सहायक एक बाप है। अभी तो श्रीमत पर चलना है। मनुष्य मत तो बड़ा गंदा बना देती है। उनकी ग्लानि करेंगे उनकी करेंगे। यह है माया के भूत। देवता बनने बदली माया चुहरा बनाने कोशिश करती है। यह है ही पतित दुनिया। तुम समझते हो हम अभी पतित से पावन बन रहे हैं। तो यह बड़ी खराबियां हैं। समझाया जाता है तो अपना आज से कान पकड़ना चाहिए। कब ऐसा कर्म न करेंगे। कुछ भी अगर देखते हो तो बाबा को रिपोर्ट करो। तुम्हारा क्या जाता है एक/दो की ग्लानि करने में। बाप सुनता तो सभी है ना। बाप ने कानों का आंखों का लोन लिया है ना। बाप भी देखते हैं यह दादा भी देखते हैं। चलन, वातावरण कोई2 का तो बिल्कुल बेकायदे चलता है। जिनका बाप नहीं होता है उनको छोरा कहा जाता है। यह सभी महान छोरे हैं। बेहद के बाप को जानते ही नहीं। याद ही नहीं करते हैं। सुधरने बदली और ही बिगड़ते हैं। इसलिये अपना ही पद गवांते हैं। श्रीमत पर नहीं चलते तो छोरे हैं। माँ–बाप की श्रीमत पर नहीं चलते हैं। तुम्हीं माताश्च पिता..... बन्धु आदि भी यह बनते हैं। शिव थोड़े ही बनते हैं। ग्रेट ग्रैन्ड फादर ही नहीं तो मदर फिर कहां से होंगी। इतनी भी बुद्धि नहीं है तो उनको जानवर कहेंगे ना। माया बुद्धि एकदम फेर देती है। बेहद की बाप की आज्ञा नहीं मानते तो दण्ड पड़ जाता है। जरा भी सद्गति नहीं होती। बाप देखते हैं तो कहेंगे ना इनकी क्या बुरी गति होगी। यह तो टांगर अक के फूल हैं। जिसको कोई भी पसन्द नहीं करता। सुधारना चाहिए ना, नहीं तो पद भ्रष्ट हो जावेगा जन्म–जन्मान्तर, कल्प–कल्पान्तर का बड़ा घाटा है; परन्तु देहअभिमानियों की बुद्धि में बैठता ही नहीं। आत्मअभिमानी ही बाप के साथ लव कर सकते हैं। बलिहारी जाना कोई मांसी का घर नहीं है। बड़े2 आदमी तो बलिहार जा न सके। वह बलिहारी का अर्थ भी नहीं जानते। हृदय विर्दीण होता है। बहुत बन्धनमुक्त भी हैं बच्चा आदि कुछ भी नहीं, कहते हैं बाबा आप ही हमारे बच्चे हो। ऐसे2 मुख से कहते हैं परन्तु सच्च नहीं। बाप से भी झूठ बोल देते हैं। बलिहार गये तो अपना ममत्व निकाल लेना चाहिए ना। अभी तो पिछाड़ी है ना। तो श्रीमत पर चलना पड़े। मिलकियत आदि सभी से ममत्व निकल जाये। बहुत हैं ऐसे बन्धन मुक्त। शिवबाबा को अपना बनाया है। एडॉप्ट करते हैं ना। यह हमारा बाप, टीचर, गुरू है। हम उनको अपना बनाते हैं। उनकी पूरी मिलकियत लेने। जो बच्चे बन गये हैं वह घराणे में जरूर आते हैं; परन्तु फिर उसमें भी पद कितने हैं। कितनी दास–दासियां हैं एक/दो पर हुकुम चलाते हैं। दासियों में भी नम्बरवार बनने हैं जरूर। रॉयल घराणे में बाहर के दास दासियां तो नहीं आवेंगी ना। जो बाप के बने हैं उनको ही बनना है। ऐसे2 बच्चे हैं जिनमें पाई का भी अकल नहीं है। बाबा तो ऐसे कहते नहीं मम्मा को याद करो वा मेरे रथ को याद करो। बाप तो कहते हैं मामेकं याद करो। देह के सभी सम्बन्ध छोड़ अपन को आत्मा समझो। कोई बच्चा आदि भी नहीं। बाकी स्त्री–पुरूष मकड़े की जाल में फंसते हैं। अपने लिये ही जाल बनाते हैं। पहले स्त्री की जाल में, फंस पड़ते हैं तो निकले कैसे। फिर बच्चों के जाल में फंस पड़ते हैं। फिर पिछाड़ी में मरने समय सभी की याद आती है। अंतकाल बच्चे भी याद आवेंगे। तो स्त्री भी.... फिर ऐसा ही जन्म मिलेगा। बाप समझाते हैं प्रीत रखनी है तो एक से रखो। तो बेड़ा पार है। बाप की डायरेक्शन पर चलो। बाप

की डायरेक्शन पर अमल करना है। मोहजीत राजा की कथा भी है ना। पहले नम्बर में हैं बच्चे। स्त्री के बाद फिर सारा प्यार बच्चों पर जाता है; क्योंकि बच्चा मिलकियत का वारिस बनेगा। वह तो हाफ पार्टनर है। वह फुल मालिक बन जाता है। तो बुद्धि उस तरफ जाती है। बाबा को फुल मालिक बनावेंगे तो यह भी सभी कुछ तुमको दे देंगे। लेन देन की बात ही नहीं। यह तो समझ की बात है। बाप जो समझाते हैं उसपर अमल करना चाहिए। कई तो बिल्कुल ही जट हैं। भल तुम सुनते हो दूसरे दिन सभी भूल जाता। सभी कुछ भूल जाते हैं। एक बात तो अपनी बुद्धि में पक्का करना चाहिए जो फिर किसको भी समझा सको। यह बाप का वरसा स्वर्ग की बादशाही मिलती है। कैसे सो समझाना है। इन (ल0ना0) को बाप का वरसा है ना। तो अभी भी जरूर बाप से वरसा मिलता है। बाप को याद करने से तुम स्वर्ग के मालिक बन जावेंगे। यह तो बहुत सहज है। मुख चलाते रहो। एमऑबजेक्ट बताते रहो। विशाल बुद्धि वाले झट समझेंगे। अन्त में यह चित्र ही काम आवेंगे। इनमें सारा ज्ञान भरा हुआ है। ल0ना0 और राधे कृष्ण का सम्बन्ध क्या है वह भी कोई नहीं जानते हैं। ल0ना0 जरूर पहले प्रिन्स प्रिन्सेज होंगे। बेगर टू प्रिन्स हैं ना। बेगर टू किंग नहीं कहा जाता। प्रिन्स के बाद ही किंग बनते हैं। लक्ष्मी–नारायण छोटेपन में कौन थे। यह किसको भी पता नहीं है। 100% ईडियट को बाप आकर 100% आइडल बनाते हैं। समझते भी हैं यह तो बहुत ही सहज है; परन्तु माया का कोई2 पर बहुत आवरन है। किसकी निन्दा करना, ग्लानि करना यह तो बहुतों की आदत है और तो कोई काम है ही नहीं। बाप को कब याद नहीं करेंगे। एक/दो की ग्लानि का ही धंधा आदि करते हैं। यह है माया का पाठ। बाप का पाठ तो बिल्कुल ही सीधा है। झूठ बोलना, बातें बनाना सीखना हो तो जाओ, व्यास के बाजू में जाकर बैठना। संन्यासी लोग भी पिछाड़ी में आवेंगे जब तुम्हारी बहुत बातें सुनेंगे तब जागेंगे। अभी नहीं। प्राईममिनिस्टर आदि बड़े2 अभी नहीं सुनेंगे। पिछाड़ी में यह सन्यासी आदि सभी जागेंगे। ज्ञान है तो इन ब्रह्माकुमारियों में है। कुमार कुमारियां ही पवित्र होते हैं। हम कुमार हैं। प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे हैं। हमारे में कोई खराब ख्याल भी न आना चाहिए। आता तो बहुतों को है। बहुत केस होते हैं। फिर इसकी सजा भी बहुत कड़ी है। तो बाप समझाते तो बहुत हैं। भूल चूक हो जाती है। समझो कोई कहते हैं काला मुंह कर दिया। अच्छा अब क्या चाहिए। फिर से अपना पुरूषार्थ करें, अपनी उन्नति करें तो उन्हों को वारनिंग दे अलौ करना पड़े। उनको बोलना है अगर कुछ चाल तुम्हारी फिर देखी तो निकाला जावेगा। थोड़ा सज़ा भी देनी होती है। तुम लायक नहीं हो। इन्द्रसभा में कोई भी छी छी आदमी बैठ न सके। अगर बैठते हैं तो अवस्था गिर जाती है। बाप को ठगते हैं ना। इसमें सजा ही है गिरावट की। बाप को याद कर न सकेंगे। वह अवस्था सारी गिर जाती है। अवस्थाएं ऐसी गिरती हैं बात मत पूछो। श्रीमत पर न चलने से अपना पद भ्रष्ट कर देते हैं। ध्यान आदि में कुछ भी फायदा नहीं है। बाप के डायरेक्शन पर न चलने से और ही भूत की प्रवेशता होती है। क्योंकि बेकायदे ध्यान में जाते हैं ना। बाप का तो सिर्फ़ डायरेक्शन है भोग लग जाने का। वैकुण्ठ आदि में जाने लिये थोड़ा ही कहा है। उसमें कुछ फायदा नहीं। पहले तो सा0 होती थी बच्चों को बहलाने लिये। बाबा को भी खुशी हुई ना विनाश होगा फिर हम वैकुण्ठ में चले जावेंगे। यह थोड़े ही पता था याद की यात्रा की इतनी मेहनत करनी पड़ेगी। दिन प्रति दिन प्वाइंट्स मिलती जाती हैं। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। यह प्रैक्टिस पहले थोड़े ही होती थी। अभी तो अच्छी मेहनत करनी है। सा0 आदि का काम न है। देखा जाता है सा0 करने वाले तो बहुत जाकर डूब मरे। आगे सिंगल डूबते थे अभी डबल डूबते हैं। बाबा को तो कब कब ख्याल आता है, कहीं बहुत कड़ी सजाएं अभी से ही शुरू न हो जावें। सजाएं भी गुप्त बहुत होती हैं ना। कोई कड़ी पीड़ा न आये। बहुत गिरते हैं। सजा खाते हैं। बाप तो सभी इशारे में समझाते रहते हैं। अपने तकदीर को लकीर बहुत लगाते हैं। इसलिये बाप खबरदार करते रहते हैं। अभी गफलत करने का समय नहीं है। अपन को सुधारो। अन्त घड़ी आने में कोई देरी नहीं। अच्छा, रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग और नमस्ते।